SUSHIL KUMAR

मेरा नाम सुशील कुमार है। घर- ठेही, पोस्ट-उमगाव,
जिला- सुपौल, बिहार का रहनेवाला हूँ। मैं
मेरा जीवन मतलब कि बहुत कठिन निकला है।
मेरा उमर 27 साल है। मेरे हिसाब से, वैसे
मैं देख रहा हूँ दुनिया को, देखके जो टाइमपास
कर रहा हूँ। मैं जितना परेशान हूँ उससे
आगे देखता हूँ तो वे मेरे से भी ज्यादा परेशान
है वो देखके अपना पीछे का दर्द भूल जाता हूँ।
वैसे, मैं भी बहुत परेशान आदमी हूँ, काफी
गरीब घर का हूँ, मैं सातवीं पास हूँ। आगे...
मतलब कि मेरे घर में, मेरे परिवार में,
पापा के पास इतना नहीं था, कि मैं आगे
पढ़ सकता। इसलिए मैं, सब हालात को
देखते हुए, परिवार में मैं बड़ा हूँ लड़का, बाकी
हमारे ऊपर माँ-बाप, भाई बहन सबका
जिम्मेवारी हमारे ऊपर है। मैं देख लिया कि
मेरे घर में, नहीं है चलने वाला, इस टाइम मैं
चौदह साल का था, चौदह साल का
आदमी मतलब बहुत समझने लगता है
ऐसा बात नहीं है। हम देखते थे, हमारे
को मेरे माँ-पापा कभी किसी चीज का
तकलीफ नहीं होने देता था। शुरु में हम
घर का हालत तो देख सकते थे,
समझ सकते थे, देख-सुन के समझ के, ऐसे
भी, एक आदमी दिल्ली में रहता था और
वो गाँव गया था, वो बोला- इस टाइम मैं
बच्चा था, वो कह रहे थे तू वहाँ जाके
क्या करेगा, इसका काम नहीं मिलेगा। तब
नहीं मिलेगा वहाँ पे- बोला चल, देखते हैं
उन्होंने ले आया। आने के बाद यहाँ पे

सात सौ रुपये महीने का। करने लगा नौकरी, कुछ पैसा बचाता रहा, घर भेजता रहा, कुछ अपना भी चलो- खाने- पीने भी। धीरे-2 करते- करते। छै- सात महीना तक काम किया इस लाइन में। फिर उसके बाद में दूसरा लाइन लगा। दूसरे लाइन में काम करने लगा, टैकनीकल लाइन में, वहाँ लगा 562 रुपये में। एक- दो साल, दो साल तक काम किया। फिर वहाँ से मैंने नौकरी छोड़ दिया। नौकरी छोड़ के कुछ काम का जानकारी हो गया मुझे। नौकरी वहाँ से देखा मुझे नुकसान काम मिल रहा है। मैं वहाँ से नौकरी छोड़ के, दूसरे जगह लग गया। वहाँ पे मुझे भी कहा कि मैं कुछ काम सिखूँ। क्यों, जैसा काम रहा था, वहाँ था नहीं, काम सिखने का जुगार। वहाँ से नौकरी छोड़ दिया के दूसरे जगह लग गया। शुरू भी किया काम सिखने का। मैं नौकरी करता था उस टाइम में हजार रुपया मिलता था, नौकरी करता था, वहाँ काम भी सीखता था, मालिक वहाँ पैसा दूर से रखा था। काम सीखते-2 जब मुझे, ज्यादा जानकारी हो गया, फिर मैंने देखा मार पैसे कम मिल रहे हैं, ज्यादा जानकारी हो गया, मुझे ज्यादा जान- पहचान हो गया था। फिर मैंने अपना खुद का काम, दस- पन्द्रह हजार लगा के शुरू किया। फिर मत खराब होता है, आदमी का तो ऐसा ही होता है। काम लगाने के बाद में तीन- चार महीने तक काम किया, मेरा तबियत बहुत ही खराब हो गया।

-- - किस तरह का काम किया था, आपने ?

मैं टेक्नीकल ~~[illegible]~~ लाइन जैसे, ~~हो~~ टेलीवीजन पार्ट एसी पार्ट, मारुति पार्ट ये सब बनाने का काम किया। तबियत मेरा कुछ ज्यादा ही खराब हो गया, मतलब इतना हो गया कि मुझे घर आना पड़ा। घर मैं चला गया; घर में मुझे काफी टाइम लग गया। दो तीन महीने लग गया। जिसका काम कर रहा था, वो आदमी को तो पैसा देना था, वो हमारे लिए क्यों अपना नुकसान करेगा। वो अपना काम ~~कोई~~ और कहीं और दे दिया। मैं आया दो महीने बाद तो बोला जो एक बार निकल गया तो नहीं ~~[illegible]~~ दुबारा आ नहीं सकता है। फिर से मैंने जिस कम्पनी में पहले करता था, उसमें गया। फिर मालिक को बोला, उसने मुझे फिर से रख लिया। ठीक है खुली कोई बात नहीं। फिर मैं करने लगा। करते-करते फिर मैं काफी दिन तक काम करते रहा। तीन साल और काम वहाँ पर किया। करने के बाद, वहां उस मालिक का भी कन्डीशन बिगड़ने लगा। कुछ उसको भी मजबूरी हो गया। अब यहाँ महंगाई इतना बढ़ गया कि हमारा गुजारा होने मुश्किल हो गया। मजबूरी में फिर हमें वहाँ से नौकरी छोड़ना पड़ा। फिर और कहीं लगा वहाँ पे हमने ठेके में काम लिया।

-- आप बिहार वापस नहीं हुए?

हाँ हुए।

कि हम घर में बहुत बैठ सकते हैं तो महीना भर बैठ सकते हैं। उसमें घर में इतना होता कि घर पर महीना भर बैठे, तो चौदह साल के उम्र में हम दिल्ली ही नहीं आते। अभी हमारा भी बहुत कुछ होता। हम भी पढ़ते-लिखते, हम भी ऑफिसर बनते, लेकिन नहीं है, होने के कारण, 14 साल की उम्र में दिल्ली आना पड़ा। घर जाते हैं अपने माँ-बाप से मिलकर आते हैं साल, डेढ़ साल या दस-बारह दिन रहे फिर अपना आ गए, फिर वही रूटिन चलने लगा। काम करने लगते फिर क्या करें ~~बाज~~ पीछे हड़ताल हुआ था -- 88 का, उस टाइम में घर पर आया हुआ था, तो उस हड़ताल में वो इसलिए हुआ था जो मजदूर सबको गुजारा नहीं होता था, नौकरी मिल रहा था। तो ~~हम~~ हर आदमी सब मिलकर के यूनियन किया था कि भई बढ़ना चाहिए तो पूरे एक सप्ताह का हुआ था। वो हड़ताल सफल हो गया था। वैसे मजदूर को उसमें कोई नुकसान नहीं हुआ। जो होता भी हम घर में भी बैठे रहे तो कम्पनी इतना पैसा हमको दिया और कुछ बढ़ गया। उससे मतलब मजदूरों को कोई नुकसान नहीं हुआ था और काम चलने लगा सही से। अभी फिर बाद में एक टाइम आ गया फैक्ट्री हटाओ, फैक्ट्री हटाओ। हमलोगों के आदमी के ऊपर बहुत फर्क पड़ता है हमलोग इतना बड़ा कारीगर नहीं हैं

हमको इतना पैसे नहीं है, किसी दिन जहाँ हम काम कर रहे हैं, वो फैक्ट्री बन्द हो जाय, तो हम खुद का कर लेंगे, उतना हमारे पास नहीं है। खाने को नहीं होता है, उतना कहाँ से कर लेंगे। तो अभी जो फैक्ट्री बन्द हुआ है, उससे भी हम-लोगों को धक्का पहुँचा है। फैक्ट्री बन्द हो गया, घर बैठ गए। घर में बीबी है, बच्चे हैं, गाँव में माँ है, बाप है। आज ये चिन्ता है। यहाँ पे राशन खाना, किराया में रहना, बहुत मुश्किल हो जाता है, काफी तरह का बात है और हर आदमी ये चाहता है तरक्की करूँ, बड़ा बनूँ। लेकिन इस महँगाई में लोग क्या तरक्की करेगा। हाल में सरकार दो बार ऊपर-नीचे आता है, जो सब ठीक रहता है, ऊपर गया तो भी, नीचे गया तो भी, लेकिन बीच में हमलोग जैसे आदमी मारा जाता है किसी का फैक्ट्री उठ गया, किसी का कुछ हो गया। आज फैक्ट्री उठ गया, वहाँ दस आदमी काम कर रहे थे, बेरोजगार हो गया। बैठे हमें भी बैठे हैं यहाँ पे। कंपनी बन्द हो गया क्या करें, बैठ रहे - बैठ रहे। बैठने के बाद नौकरी ढूंढा, मिला है नौकरी फरीदाबाद में कर रहे हैं, उस यहाँ पे, वहाँ मैं डाइमेकर हूँ, डाइमेकर के पोस्ट पे काम कर रहा हूँ। उतना तनखा वहाँ भी नहीं मिल रहा है जितना मुझे मिलना चाहिए, लेकिन मजबूरी है, नहीं करेंगे तो करेंगे क्या।

— अभी किनता मिल रहा है?

6

लेकिन, यहाँ बीवी-बच्चे, दो लड़की है मेरी, तो इतने तनख्वा में, अभी भी गुजारा हमको मुश्किल हो आता है, लेकिन मजबूरी है, नहीं करेंगे तो क्या करेंगे, क्या खाएंगे। सोच तो काफी रहे हैं, काफी कुछ सोच रखे हैं, ये करेंगे-वो करेंगे, लेकिन किस्मत साथ नहीं दे रहे। अपना अभी कर रहे हैं, किसी तरीके से कर रहे हैं गुजारा। सोचे तो बहुत कुछ हैं, कि दिल्ली में अपना घर बनाएं। अपना काम हो, कारोबार हो, हम भी अपने मां-बाप को वहाँ गरीबी से निकाल के अपने साथ रखें, ख़ुशी-ख़ुशी से रहें। लेकिन ये शायद संभव मुश्किल ही लगता है, कोशिश करना तो हमारा काम है, हम कर ही रहे हैं। देखते हैं, कहाँ तक हम कर सकते हैं।

-- भगवान आपको हेल्प जरूर करेंगे।

- थैंक यू।

-- आपकी जब शादी हुई तो इसके बाद लाइफ में किस तरह का परिवर्तन आया?

देखिये, मेरी शादी होने के बाद, मैं ये सबसे बड़ा लड़का हूँ, घर में मैं ही भाई हूँ, मेरी एक सिस्टर है, जिसकी मैरिज पहले हो चुकी थी। तो घर में मेरे मम्मी-पापा रह गया मैं और मेरा भाई। गरीबी के हालात में मेरा भाई भी, उस टाइम अब मैं दिल्ली आया तो वह भी छोटा

ही था, मेरे से भी कम उम्र का ... था वो, उसको भी मैं ले आया, वो भी साथ ही रहता है। साथ ही काम करता है वो भी, तो--- मेरी मैरेज अभी नहीं होनी थी, लेकिन मजबूरी में करना पड़ गया, हमारे घर वालों को, क्योंकि हमारी मम्मी बीमार रहती थी, तो घर में जो भी खाना पीना, काम तो इतना, खेती-बाड़ी है नहीं घर में, काम तो क्या करना था। खाना-वाना बनाने में भी तो, मेरी मम्मी से नहीं होता था, उस मजबूरी में मेरे पापा ने मतलब की जल्दी कर दिए मेरी शादी नाइनटी सिक्स में हुई। इसके बाद मुझे घर की चिन्ता नहीं रहा कि मेरी मम्मी किस हाल में होगी, मेरी मिसेज घर को सम्भाल लिया अपना। यहाँ से मैं पैसा भेजता था, वो घर चलाती थी, पापा मेरे घर पर ही रहते हैं, खेती बाड़ी थोड़ा-बहुत लेकर करते हैं। काम करते हैं किसी तरह।

-- शादी से पहले किसी लड़की को आपने पसन्द किया था?

देखिये ऐसा कुछ नहीं था, शादी से पहले भी क्योंकि ये पसन्द करना, इश्क करना ये सब वो करते हैं, जो फ्री रहते हैं, सुखी रहते हैं। लेकिन हमारे जीवन में इतना मजबूरी और इतना गरीबी था कि ये सब ... सोचने का हमारे पास

8

लगा दिए कि हमारे को, आज का खाना कम पड़ जाएगा। इसलिए ये बात हम कभी नहीं सोचे। कि हम किसी से मांग पायेंगे या किसी को चाहेंगे, ऐसा कभी नहीं हुआ। ऐसा कुछ नहीं था, एकदम से, मेरे घरवालों ने ही देखा, हमारे को भी दिक्कत है तो उनलोगों ने ऐसा शादी कर दिया।

— शादी के बाद आपका जो वैवाहिक जीवन था, बहुत अच्छा गुजरा ?

शादी के बाद हमारा वैवाहिक जीवन, बहुत खुशी से गुजरा, बहुत अच्छा रहा। बहुत खुशी से हैं, ठीक है, गरीब हैं तो कोई बात नहीं, लेकिन अपना जितना कमाते हैं, उतना खाते हैं अपना खुशी से रहते हैं, हमारे को दो लड़की हुआ है, उसे नाती एक हुआ है, न कोई हमारे माँ बाप, ठीक है कुछ नहीं है हमारे पास, जो भगवान दिए हैं, हमारे को, आगे भी देगा। हम वो सोचा के अपना कर रहे हैं, वैसे हमारा काम है कि अपने लड़की को पढ़ाएँ-लिखवाएँ। कुछ अच्छे पोस्ट पर दें ताकि हम, आगे हमलोग जितना परेशानी झेले हैं, हमारे आगे का कोई ना झेले, इतना,

— — आपको अफसोस नहीं है कि दो-दो लड़की हो गई, हमें लड़का नहीं हुआ ?

नहीं जी नहीं, अफसोस चूँकि इसलिए नहीं है, कि ये, तो ऐसा ही है, दो लड़की हो गई कोई बात नहीं, लड़का भी हो जाएगा। ऐसा तो है नहीं कि सोचने से लड़की लड़का में बदल जाएगी।

जो हुआ है, वो हुआ है, उस बात से अफसोस करने का क्या फायदा है, कुछ तो होगा नहीं।

– आपको ऐसा नहीं लगता है, कि लड़का के चक्कर में और जन संख्या बढ़जाएगी, फैमिली और परेशानी बढ़ जाएगी।

→ देखिये, लड़का के चक्कर में लड़की होने दूँगा, खैर, ऐसा तो नहीं होने दूँगा। आदमी आजकल वैज्ञानिक, विज्ञान मतलब जो है, विज्ञान हमारा काफी तरक्की जो है, आजकल समझदार काफी, हो गए है आदमी कि हर चीज, कोई काम होने से पहले ही पता चल जाता है, आजकल काफी ऐसा ही चल रहा है कि, हम कोशिश जरूर करेंगे कि हमारे को एक लड़का होना चाहिए। ऐसा कोई भी आदमी नहीं है, कि कोई ये करेगा कि, अच्छा कोई बात नहीं, लड़का नहीं हुआ तो कोई बात नहीं, ऐसा नहीं है। तो हम जरूर चाहेंगे कि एक लड़का हो जाए। फिर भी हम पैदा होने से पहले, कोई डाक्टरी जाँच करवाएँगे। तो उसके हिसाब से जन संख्या बढ़ाएंगे या कम करेंगे।

– जीवन का और कोई सपना है, आपका?

जीवन का सपना देखिये है, तो बहुत लेकिन .. । कोशिश में लगे है, अगर भगवान चाहा तो जरूर करेंगे। हमारा सबसे बड़ा सपना जीवन का यही है कि और

किसी तरह का परेशानी हो, और उन्होंने हमेशा अपने घर वालों को खुशी और सुखी देखना चाहते हैं रखना चाहते हैं

— आपका किस्सा बहुत पैक्य है, बहुत ही अच्छा किस्सा है। हम भी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि आपकी मनोकामना पूरी हो जाय। और — आप ये थोड़ा सा बताएँ कि, फैक्ट्रियाँ जो बन्द हुई थी, दिल्ली के अन्दर उसका effect इस क्षेत्र पर क्या हुआ?

देखिये, इसका effect इस क्षेत्र पर बहुत हुआ। इसलिए बहुत हुआ कि यहाँ पे जो इन्डास्ट्रियल एरिया है, फैक्ट्री है, इसमें ऐसा नहीं होता कि आज जो आदमी काम पे लगा, तो कल निकल जाएगा। जो लग गया वो लगा रहता है जो परमानेन्ट नौकरी कर रहा है वो कर रहे हैं तो उन जैसे जो नया आदमी आया, परमानेन्ट आदमी है उन्हें तो काम ऐसे ही एरिया में करना पड़ा, जो छोटे कंपनियों में। और वो कम्पनी एकदम ही पूरा बन्द हो गया तो, हमलोगों के ऊपर बहुत असर पड़ा। मतलब इससे हमलोग बहुत परेशान हुए, मतलब बहुत ही आदमी परेशान हुआ, फैक्ट्री बन्द होने से, बहुत आदमी परेशान हुआ।

— आपको ऐसा नहीं लगा, कि जो factory बन्द हुई, प्रदूषण की वजह से हुआ, जिससे आप लोगों को भी फायदा होगा।

प्रदूषण के वजह से हुआ, फायदा होता वो तो ठीक है, लेकिन, इसके साथ-साथ और भी कम्पनियाँ बन्द ये गई।

-- जो नहीं होना चाहिए।

जो नहीं बन्द होना चाहिए। हमलोगों का जो काम ऐसा है, जो कि इसमें से प्रदूषण निकलने का बिल्कुल नहीं है लेकिन वो कम्पनी भी बन्द कर दिया गया। प्रदूषण का जो है, वो तो बन्द हो गया ठीक है, लेकिन हमलोगों का नहीं बन्द होना चाहिए। वो भी बन्द हो गया। परेशानी तो एक के साथ-साथ बहुतों को हो गया। बहुत आदमी को परेशानी हो गया।

-- अच्छा आपका कोई political involvement है?

कोई नहीं।

-- इस एरिया में जो सिवा लाइन नहीं आया है, उसके लिए प्रयास आपलोग कर रहे हैं?

इसलिये हमलोग जिस कॉलोनी में रह रहे हैं, इसमें तो सिवा लाइन आ नहीं सकता। क्योंकि कालोनी unauthorised है ऐसे ही है, इसमें तो कभी हो नहीं सकता सिवा लाइन। तो प्रयास करने से कोई फायदा नहीं है परेशानी जो था हमलोगों का पानी का, बिजली का तो जो संभव था, तो हमलोगों ने इकट्ठा हो के, Application देके, करके हुआ, हमलोगों का जो M.L.A है, उनके पास जाके, उनको करके, वो ...

एम. एल. ए. हमारा, चौधरी रामसिंह नेताजी हैं, उनको कहके उनके पास जा के, उनको समस्या बता के, उनसे हम अपना लाइट का पानी का ले दोनों जो है सुविधा उपलब्ध करवा लिए हैं। हमें इन सब का अब कोई परेशानी नहीं है।

-- यानि इस एरिया के सारे लोग तकरीबन खुश हैं

देखिये, इस एरिया के जो आदमी हैं, जिस लाइन के हैं, जिस category के हैं, उस हिसाब से सही है। इस एरिया में तो बहुत आदमी हैं, जो कि अभी भी बहुत परेशान हैं। हम अपने से हर आदमी को नहीं बराबरी कर सकते हैं हम तीन हजार रुपये कमा रहे हैं, तो हम ग्यारह हैं आराम से, ऐसा नहीं कर सकते हैं कि जब हम तीन हजार में हमारा पूरा नहीं हो रहा तो, जो दो हजार का नौकरी कर रहा, जब हम इतना परेशान हैं तो वो कितना परेशान होंगे। तो इसलिए हम खुश तो नहीं कह सकते हैं, पर दुखी रहके भी अपना क्या कर सकता है compromise करना पड़ता है एक रोटी खाते हैं अभी, आधी रोटी मिल रहा है नहीं खाएगी तो भूखे रहेंगे। खाते हैं तो और भूखे रहेंगे तो करना पड़ रहा है, मजबूरी में। अगर हम तीन हजार का नौकरी यहाँ नहीं करेंगे तो, हो सकता चार महीने बैठ जाएँगे कि पाँच हजार मिले, तो हम क्या खाएँगे दो महीना। इसलिए जो मिल रहा है, कर रहे हैं, टाइम पास कर रहे हैं, गुजारा कर रहे हैं।

-- जब आपको खुशियां मिल जाती हैं तो आप अपने जीवन को किस तरह बिताने की कोशिश करते हैं?

जब हमारे खुशी हो है तो अपने जीवन को आपने